اگست ۲۰۱۴ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفران مآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I.No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No.SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month
Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 20/-

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

AUGUST 2014





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 11 — अंक 2

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अगस्त 2014

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per Copy 20/- Annual 200/-

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.noorehidayatfoundation.com
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

fo'k; lwph

अगस्त 2014ई०

शव्वाल 1435हि०

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद दिलदार अली नक़्वी गुफ़रानमॉब

y$kd %मुस्तफ़ा हुसैन नक़्वी असीफ़ जायसी

मौलाना सय्यद दिलदार अली गुफ़रानमआब इब्ने सय्यद मुहम्मद मुईन (देहान्त 1191 हि0) इब्ने सय्यद अब्दुल हादी इब्ने सय्यद इब्राहीम इब्ने सय्यद तालिब इब्ने सय्यद मुस्तफ़ा इब्ने सय्यद महमूद इब्ने सय्यद इब्राहीम इब्ने सय्यद जलालुद्दीन इब्ने सय्यद ज़करिया जायसी (फ़ातेहे दुव्वुमे नसीराबाद) इब्ने सय्यद खिज़्र (अकसर तज़किरों में ख़िज्र को जाफ़र लिख दिया गया है) इब्ने सय्यद ताजुद्दीन इब्ने क़ाज़ी सय्यद नसीरूद्दीन जायसी (फ़ातेहे अव्वले नसीराबाद) इब्ने सय्यद अलीमुद्दीन इब्ने अशरफुल मुल्क सय्यद शरफुद्दीन वाली–ए–जायस (देहान्त 424 हि0) इब्ने नवाब नजमुल मुल्क अल्लामा सय्यद नजमुद्दीन सब्ज़वारी (फातेहे जायस देहान्त 420 हि0 1027 ई0) इब्ने सय्यद अली इब्ने सय्यद अबू अली इब्ने सय्यद अबू योला मुहम्मद कुछ तहरीरों के अनुसार अबुल उला मुहम्मद) इब्ने सय्यद अबूतालिब हमज़ा इब्ने सय्यद मुहम्मद इब्ने सय्यद ताहिर इब्ने सय्यद जाफ़र इब्ने इमामे दहुम अली नक़ी अलैहिस्सलाम।

अल्लामा शाह हुसैन मिरज़ा सफ़वी तूसी ने गुफ़रानमॉब के पूर्वजों की प्रशंसा में फारसी में एक 50 पंक्तियों की कविता लिखी है। 'तज़किरा–ए– उलेमा' में सय्यद मेहंदी इब्ने नजफ़ अली हुसैनी रिज़वी गुफ़रानमॉब का शजरा लिखने के बाद कहते हैं कि इनके सभी पूर्वज प्रतिष्ठा एंव प्रकाष्ठा के प्रतीक थे।

मौलाना सय्यद मुहम्मद बाक़िर शम्स साहब 'तारीख़–ए–लखनऊ' में लिखते हैं ''बनी हाशिम खुसूसन ख़ानदान–ए–रिसालत हमेशा इल्म और शुजाअत दो जौहरों के मालिक थे और ये दोनों जौहर आज तक क़ुदरती विरासत के तौर पर हमेशा मुन्तक़िल होते रहे, बेशक इनके ज़हूर के मौक़े मुख़तलिफ़ थे। जब तक़ैये की घटाएं छाई ज़बान और क़लम पर पहरे बैठे तो इल्म सीनों के अन्दर चिराग़े ज़ेरे दामां की सूरत मख़फ़ी रहा और सिपाहियाना ज़िन्दगी के पर्दे में शुजाअत ने अपने जौहर दिखलाए लेकिन जब अम्नो अमान का आफ़ताब निकला और तक़ैया का परदा हटा तो वह इल्मी जौहर जो तग़ाफ़ुले ज़माना के हाथों कुव्वतो इस्तेदाद के परदे में पिन्हा था फेलियत के मारज़ में आया (क्रियाशील हुआ) और फिर वह जलवागरी दिखलाई कि आलम भर की नज़रें ख़ीरा रह गई।''

नक़्वी सादात के इस मुक़तदर (प्रतिष्ठा) खादनान की तारीख़ को दो दौरों में मुन्क़सिम (विभाजित) किया है, ख़िलाफत–ए–अब्बासिया व वस्ती ज़माना (मध्यकाल) और ग़ैबते सुग़रा के बाद ग़ैबते कुबरा का इब्तेदाई अहेद (आरम्भिक काल), सादात की मुख़ालिफत में जुल्म व सितम के समन्दर की कोह पैकर लहरें जबरो इस्तेबदाद (अत्याचार और अन्याय) की घटाएं उमड़ी हुई आपस में, सादात का बेड़ा और वह भी बे नाखुदा, इस आलम में मज़लूम सादात के लिए इल्मी मज़ाहरों का क्या इम्कान था''।

इमाम अली नक़ी अलेहिस्सलाम के बाद उनकी औलाद पर सामरा की ज़मीन तंग हो गई थी, जाफर के बाद ताहिर और फिर मुहम्मद ने किसी तरह अपनी वज़ा को निभाया और इस सर ज़मीन से जुदा न हुए लेकिन

21 रमज़ान 292 हि0 को आपका इन्तेक़ाल हुआ और अबूतालिब हम्ज़ा को सामरा छोड़ कर ईरान जाना पड़ा जहाँ 2 रबी–उल–अव्वल 310 हि0 शीराज़ में उनका देहान्त हुआ। उनके बेटे अबू योला या अबुल उला मोहम्मद सब्ज़वार में जाकर ठहरे और वहीं 25 सफ़र 330 हि0 में इन्तेक़ाल किया। इसके बाद से यह शजरा सब्ज़वार ऐसे धर्म के केन्द्र में फलता फूलता रहा यहाँ तक कि कई नस्ल, की कई पीढ़ियाँ वहीं पैदा हुईं जिनमें से अधिकतर साहिबाने इल्मो दीन गुज़रे हैं।

uokc ut eqy eqYd l ;n ut eqnhu lCtokjh Qkrgs tk;l

साहबे 'तज़किरए उलमा' लिखते हैं कि सय्यद नजमुद्दीन सब्ज़वारी सब्ज़वार शहर से सम्बन्ध रखते थे जो बहुत मशहूर है और वह इमामिया शहर ग़ज़नवी सलातीन की हुकूमत में से था। सय्यद नजमुद्दीन सिपहसालार मसऊद ग़ाज़ी की मदद के इरादे से हिन्दुस्तान आये थे और विद्या नगर के किले को फ़तह नगर

के किले को फ़तह कर के उसका नाम जाए ऐश रखा और अब वह जायस कहलाता है।

साहबे 'तजकिरतुस सादात' ने नवाबुल मुल्क के सम्बन्ध में लिखा है कि वह अपने ज़माने के मुत्तक़ी व परहेज़गार थे।

जनाब 'शम्स' साहब लिखते हैं कि ''सय्यद नजमुद्दीन सब्ज़वारी अपने ज़माने के अल्लाम–ए–रोज़गार फ़कीह और सारी रात इबादत में मसरूफ रहने वाले मुत्तक़ी और मशहूरे आफ़ाक नबर्द आज़मा, शुजा व बहादुर थे कि उनकी नज़ीर चश्मे फलक ने आज तक नहीं देखी। सालार मसऊद ग़ाज़ी की नुसरत व मदद के सिलसिले में सब्ज़वार छोड़कर हिन्दुस्तान आए और 17 रजब 420 हि0 मुताबिक 1027 ई0 को किला विद्या नगर को मुसख़्ख़र करके उसका नाम ''जाए ऐश'' रखा जो कसरते इस्तेमाल से जायस मशहूर हो गया। उस वक्त से यह कसबा सादाते नक़विया का मसकन हुआ।''

सय्यद नजमुद्दीन की जंगों में भाग लेने का सिलसिला जायस की विजय के पश्चात भी जारी रहा। आपने अपनी विजयों से जगह जगह तौहीद के चराग़ रौशन किए यहाँ तक कि 420 हि0 के आखिरी भाग में मशहूर शहर बनारस में जंग करते हुए शहीद हुए। क़ब्र इस वक्त भी खासो आम की ज़ियारत गाह है। उनके बेटे अशरफुल मुल्क सय्यद शरफुद्दीन ने बहादुर बाप से शिक्षा पाई थी और खुद भी साहसिक एंव वीर व्यक्ति थे। जायस की विजय के बाद वहाँ की हुकूमत भी बाप के द्वारा उन्हें दी गई। लेकिन अफसोस कि उम्र ने साथ न दिया और बाप के बाद केवल पांच साल ज़िन्दा रहे और 425 हि0 मुताबिक 1032 ई0 में देहान्त हुआं उनकी संतानों ने भी अपने बुजुर्गों की तरह सिपाहियाना ज़िन्दगी बसर की और एक लम्बे काल तक जायस इसी ख़ानदान के गौरव व वैभव का केन्द्र बना रहा।

nk;y myw tk;l %

मुन्शी तसद्दुक़ हुसैन सिदक़ जायसी जो 'जलील' मानकपुरी के शिष्य थे अपनी कविता में लिखते हैं:

मंबए फज़लो कमाल ए जायस ए दारूल उलूम
है तेरे अफ़राद की दुनिया के हर गोशे में धूम
क्यों न हो मशहूर तू हिन्दुस्ताँ से ता बा रूम
कम नहीं यूनान के ख़ित्ते से तेरी मरज़बूम
देखकर तारीख़ और सुन सुन के अफ़साने तेरे
हैं हज़ारों अहले दिल नादीदा दीवाने तेरे

तेरी आबादी में है लुत्फे बहारे बेख़िज़ां
तेरे नज्ज़ारे से हासिल ताज़ग़ीये जिस्मों जाँ
है सवादे शहर तेरा रूकशे बाग़े जिनाँ
चश्मए कौसर से शीरीं तर तेरा खारी कुवाँ

वज्हे तसमीया तेरी सुनता हूँ सब से जैश है
मैं यह कहता हूँ कि तू दर अस्ल जाये ऐश है।

Qr+g iVkdiqj %

पांचवी सदी हिजरी के मध्य में सय्यद नसीरूद्दीन जायसी ने कसबा पटाकपुर को जो जायस से थोड़े फासले पर है फतह कर लिया। इसी ज़माने में एक मस्जिद भी वहाँ बनवाई गई जिसकी तारीख़ का माद्दा ''मक़ामे इब्राहीम'' है। इससे 440 हि0 निकलता है। जब 1266 हि0 में इस मस्जिद का नव निर्माण किया गया तो मिसर ए तारीख़ को बढ़ा कर ''सल्ले हाज़ा मक़ामो इब्राहीम'' किया गया जिसके अदद 1266 होते हैं।

यह न मालूम हो सका कि उपरोक्त कस्बे पर सय्यद नसीरूद्दीन का कब्ज़ा कब तक रहा और उनकी ज़िन्दगी ही में या बाद में कब्ज़ा कैसे हट गया। आपकी कब्र मस्जिदे मनारा सैदाना जायस में है।

Qr+g ulhjkckn %

सय्यद ज़करिया ने शेरशाह सूरी के काल में पटाकपुर पर दोबारा हमला किया। राय प्रताप सिंह यहाँ का ज़ालिम और क्रूर राजा था। उसने मुक़ाबला किया। निर्णायक लड़ाई हुई। अन्त में राय प्रताप पराजित होकर भागा। सय्यद ज़करिया ने कब्ज़ा कर लिया और वहीं रहने लगे और अपने दादा सय्यद नसीरूद्दीन के हमले की स्मृति में उसका नाम नसीराबाद रखा जो गुफरानमआब का जन्म स्थान है।

जब हुमायूँ शेरशाह सूरी से पराजित होकर ईरान चला गया तो कुछ दिनों बाद जायस में यह ख़बर मशहूर हुई कि हुमायूँ फिर आ रहा है। यह ख़बर शेरशाह दरबार तक पहुंची तो जायस पर कहर टूटा और उसको खोद डालने का हुक्म हुआ। यह ख़बर सुनकर जायस के लोग ''मंगरा'' के वन में जो जायस से कुछ दूरी पर था चले गये और वहां रहने लगे । इसी ज़माने में नसीराबाद पर सुल्तान ने कहर ढ़ाया। इन लोगों ने नसीराबाद के करीब कड़ा ढीह में पनाह ली। सलीम शाह सूरी के शासन काल में आबाद होने का हुक्म मिला तो सब अपने अपने वतन वापस आये। लेकिन प्रसिद्ध ''पद्मावत'' के लेखक महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी को मंगरा का जंगल इतना पसन्द आया कि उसको इबादत के लिए चुन लिया और वहीं अकबर के शासन काल में उनका देहान्त हुआ।

इस पूरे काल में इस परिवार की ज्ञान सम्बन्धित उपलब्धियों की ओर कोई विशेष रूचि का प्रमाण नहीं मिलता। केवल वीरता ही अपने सफ़लतम प्रदर्शन प्रकट कर रही थी। अलबत्ता अगर किसी को अवसर मिल गया तो उसने अपने ज्ञान की शान दिखा दी। कुछ ऐसे हज़रात भी पैदा हुए जिनका इल्मी स्थान ज़िक्र के काबिल है। उनमें पहला नाम मौलवी सय्यद अब्दुल क़ादिर का है जो 1121 हि0 में बहादुर शाह अव्वल के उस्ताद थे और आख़िर में शहज़ादा मिर्ज़ा मुअज्ज़म की शिक्षा का असर था जो बाद में बहादुर शाह के शिया होने के रूप में ज़ाहिर हुआ। जिसका ज़िक्र इतिहास के पन्नों पर आज भी मौजूद है। उनको बादशाह से इतनी नज़दीकी हासिल थी कि उनको सात लाख सालाना की जागीर मिली जिसमें तहसील सलोन, राय बरेली और डलमऊ शामिल थी।

नजमुद्दीन की सन्तानों में काज़ी सय्यद बड़े पहले शख़्स थे जो अकबर के शासन काल से पहले ओहदए क़ज़ा पर मामूर हुए फिर मौलाना सय्यद हुसैन (ओहदए ताज बख़्शी) बड़े पद पर असीन हुए। उनके बाद सय्यद प्यारा हुसैनी अकबर की हुकूमत की ओर से जागीरदार (और सूबेदार इलाहाबाद) नियुक्त हुए और जायस में इमाम हुसैन की अज़ादारी को काफी फ़रोग़ दिया। इसी ख़ानदान की एक शाख़ मुल्ला सय्यद इसमत उल्लाह

सदरूस सुदूरे दिल्ली हुए लेकिन तक़ैय्ये में रहने के कारण दीनी ख़िदमतों से वंचित रहे। उनके बाद उनके पोते सय्यद नेमतुल्लाह क़ाज़ी –उल– कुज़ात (प्रधान न्यायाधीश) के दर्जे पर फायज़ हुए। फिर उनके बेटे सय्यद कुर्बान अली ओहदए कज़ा पर मामूर हुए। ऐसे ही सय्यद अब्दुल करीम पंच हज़ारी ओहदे पर फ़ायज़ हुएं

सय्यद मुहम्मद अमीन, सय्यद रज़ा अली, सय्यद नसीरूद्दीन हुसैन, सय्यद ख़ैरूद्दीन हुसैन, सय्यद आदिल हुसैन, सय्यद अली रज़ा भी इसी ख़ानदान के अफ़राद थे जिन से मंसबे कज़ा का गौरव बढ़ा।

मुसलमानों में पहला रिफ़ारमर जो इंग्लिस्तान गया सर सय्यद अब्दुल्लाह लन्दनी इसी परिवार के सदस्य थे जो वाजिद अली शाह के शासन काल में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के पूर्वी विषयों के प्रोफ़ेसर थे।

x@j+kuevkc dknkS %

जनाब 'शम्स' फरमाते हैं कि ''दुनिया–ए–इस्लाम का वह ज़बरदस्त फ़लसफ़ी, मज़हबे हक़्क़ा का वह सरबलन्द मुतकल्लिम, मिल्लते जाफ़रिया का वह बे नज़ीर फ़कीह, मज़हबे शिया का वह कामयाब मुजद्दिद जिसके सामने तमाम उलमाए सलफ़ सरनिगूँ, तमाम फ़लासफ़ा हलक़ा बगोश, तमाम मंतिक़ी खोशाचीं, तमाम मुतकल्लेमीन ख्व़ाने करम से फैज़याब, तमाम फ़क़ीह शागिर्द, वह बेनज़ीर उस्ताद जिस पर शरीअते इस्लामिया को नाज़, हाँ वही जिसे गुफ़रानमॉब के नाम से याद किया जाता है।''

साहबे 'बर्क़े तूर' यानी नक़्दे तजल्लियात लिखते हैं कि ''आइये मैं आपको जमान'–ए–हाल से सिर्फ एक सदी पहले उस बहरेइल्म का मंजर दिखाऊ जो नसीराबाद के मुख़्तसर कस्बे से जोश खा कर निकला और बड़े बड़े बहरोबर के मैदान तै करता हुआ बाबे मदीनतुल इल्म पर ज़बहसाई करके इल्मी मोती मादने दुर्रे नजफ से लेकर पलटा और वही बाहिम्मत बशर था जिसका नाम सय्यद दिलदार अली जो रेहलत के बाद गुफ़रानमआब के लक़ब से मशहूर हुआ। यही वह मादने इल्मो ईमान था जिसने हिन्दुस्तान के जेहल को इल्म और कुफ्र को इस्लाम और निफ़ाक़ को ईमान से बदल दिया और आज अपने हुसैनिया के एक गोशे में हिदायत का ताज पहने हुए जन्नत की सर्द हवाओं में आराम कर रहा है लेकिन जिस तरह बरसता हुआ बादल जब गुज़रता है अपना पानी हर उस ज़र्फ़ में छोड़ता जाता है जिसने अपनी आगोशे फैज़ पानी के वास्ते खोल दी हो। इसी तरह यह अब्रे करम अहले हिन्द के खुश्क चश्मों को बाराने इल्म से सैर करता हुआ गुज़र गया और वह चश्में इस सहाबे हिकमत की निगाहों से ओझल होने के बाद भी मौजज़न रहे और अपने मन्बए करम की तरह खुद भी बढ़ते बढ़ते समन्दरों की तरह कुशादा दामन हुए। मेरे इस बयान को समझने के वास्ते आपको उन तारीखों पर नज़र करना ज़रुरी है जिनमें हक़पसन्द और मुन्सिफ मिजाज़ अहले कलम ने खानदाने इज्तेहाद के उलमा और शागिर्दों की फ़ेहरिस्त दर्ज की है और उनके मदारिजे इल्मी बयान करके उन मौज खेज़ समुन्दरों की तस्वीर दिखाई है।

जनाब गुफ़रानमआब रहमतुल्लाह अलैह ने जिस इल्म के एक एक क़तरे को मुख़तलिफ़ समन्दरों से छान कर अपने सीने में जमा किया था उसका न रूकने वाला ज़ोर अब्नाये सल्बी और औलादे इल्मी गरज़ बेशुमार दिलों से जुबान और क़लम तक आके नुमायाँ हुए बग़ैर न रहा।

मुझे इन्साफ़ पसन्द नाज़रीन के सामने यह कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती कि इस वक़्त जिस क़दर भी इल्म ज़ियाबार है

उसमें बहुत ज़्यादा हिस्सा उस तालीम का है जो गुफ़रानमआब व औलादे गुफ़रानमआब या इस खानदान के बिलवास्ता और बिना वास्ता शागिर्दो ने पंहुचाई।

xQj-kuevkc dk tUe LFkku %&

गुफ़रानमआब का जन्म स्थान नसीराबाद है जो सादात की एक छोटी सी बस्ती है जिसे 'दारूल इज्तेहाद' कहते हैं।

सय्यद दिलदार अली (गुफरानमआब) की विलादत 1166 हि0 में शुक्रवार के दिन एक समृद्ध परिवार में हुई। साहबे 'तज़किरतुल उलमा' लिखते हैं कि कुछ योग्य लोगों के माध्‍यम से यह बात उन तक पंहुची कि एक मोमिन जो नसीराबाद का रहने वाला था आप के जन्म के समय उनके मकान के पास मौजूद था वह कहता है कि जिस समय शबे जुमा को आप पैदा हुए उसने देखा कि उस समय एक प्रकाश उदय हुआ।

f'k{kk dh izfIr %

मोतबर रावी हैं कि एक रोज़ आप अपने खेत पर मवेशी लिए काम में व्यस्त थे कि आवाज़ आई दिलदार अली ज्ञान प्राप्ति के लिए निकलो। जब वालेदैन को इस ग़ैबी हुक्म के बारे में मालूम हुआ तो उन्होंने उनकी शिक्षा के लिए व्यवस्था करना शुरू की। आरम्भ में वह हर रोज़ नसीराबाद से जायस पढ़ने के लिए जाते थे। कुछ कुछ दिनों बाद अपने ननिहाल (जायस) ही में रहकर कुछ अरसे तक तालीम हासिल की। ज्ञान प्राप्त करने की ललक ने एक दिन आपको नसीराबाद जायस छोड़ने पर आमादा किया। अब आप वतन छोड़ कर यात्रा के कष्ट उठाकर हिन्दुस्तान के उच्चकोटि के ज्ञानी उलमा से तालीम हासिल करने में व्यस्त हो गए।

तज़किरों में है कि मौलवी बाबुल्लाह से रायबरेली में, मौलवी हैदर अली इब्ने मुल्ला हमदुल्लाह से संडीले में, सय्यद गुलाम हुसैन दकनी से इलाहाबाद में तालीम हासिल की। इसके बाद फ़ैज़ाबाद, लखनऊ और दूसरे स्थानों पर ज्ञान प्राप्त के लिए फिरते रहे।

मौलाना इस कम उम्री में बुद्धमता एंव चिन्तन के उस स्तर पर थे कि अक्सर अपने गुरूजन के उलझे हुए मतलब को ऐसा सुलझा देते थे कि शिष्य सन्तुष्ट हो जाते थे।

अन्ततः उन्होंने अपने मेधावी मस्तिष्क से निर्णय कर लिया कि अब उनकी ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए हिन्दुस्तान की ज़मीन बेआब है। उनके शिक्षा प्राप्त करने के ध्येय की प्रतिबद्धता और एकाग्रता के फलस्वरूप आसिफी काल में नवाब सरफराजुद्दौला मिर्ज़ा हसन रज़ा खाँ साहब सय्यद की मदद् के लिए आगे आये और उन्होंने अपनी इल्म दोस्ती का सबूत दिया। उन्हें महसूस हुआ कि हिन्दुस्तान में अब तक फिक़्हे जाफ़रिया का माहिर ऐसा नहीं हुआ जो मुजतहिदे जामेउश शराएत कहा जाए। अवध की सरकार के सहयोग से आपने इराक़ व हिजाज़ की यात्रा का निश्चय किया। हिन्दुस्तान के बाहर का सफ़र महीनों का कष्ट उठाने के बाद समाप्त हुआ और फिक़्ह व उसूल की उच्च शिक्षा का शुभारम्भ हुआ और विभन्न गुरूओं से शिक्षा ग्रहण करने का सिलसिला लम्बे समय तक चलता रहा और आपने अपने आराम और सुख सुविधा को छोड़कर विद्यार्थी जीवन का पराक्रम एंव कष्ट सहर्ष उठाया यहाँ तक कि आपने पवित्र मशहद के गुरूओं और उलमा से भी फ़ैज़ हासिल किया और एक बहुत विस्तृत भू–खण्ड का भ्रमण कर डाला। इराक़ की शिक्षा काल की वह घटना भी आपके जीवन का महत्वपूर्ण अध्याय है कि जब आपने कुब्बे के नीचे दुआ की कि इल्म व शरफ़ आपकी औलाद में बारहवें इमाम के ज़ुहूर तक बाक़ी रहे। यह जज़्बा उनको हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह से प्राप्त हुआ था। दुआ क़ुबूल

होने के सारे अस्बाब जमा थे। आलिम और मुसाफिर की दुआ, शबे क़द्र का ख़ास वक्त और रौज़ए मासूम नामुम्किन था कि मुराद पूरी न हो (हज़रत गुफ़रानमआब की सवानेह से)।

इस हक़ीक़त को अल्लामा गुलाम हसनैन कन्तूरी मरहूम ने इन्तेसारूल इस्लाम भाग तृतीय पृष्ट 136 प्रकाशन 1917 ई0 में बड़े विस्तार के साथ बयान करके इस शंका का उत्तर दिया है कि सैकड़ों उलमा व मुजतहिद रौज़े की मुजावेरत में यह सआदत क्यों नहीं हासिल कर सके और गुफ़रानमआब में ऐसी क्या विशेषता थी कि उनको यह शरफ हासिल हुआ जो औरों को न हुआ।

vkidsvlkrs$k ¼xq½%

1. आयतुल्लाह आक़ा सय्यद अली मोहम्मद हुसैनी तबातबाई (साहबे रियाजुल मसाएल देहान्त 1227 हि0)
2. आलिम उलूमे रब्बानी आक़ा सय्यद मोहम्मद मेहंदी इब्ने अबी क़ासिम मूसवी शहरस्तानी।
3. मुजद्दिद फ़िक़ह व उसूल ज़ईमे अकबर अल्लामा सय्यद मोहम्मद बाक़िर बहबहानी (वफ़ात 1206 हि0)।
4. बहरूल उलूम आक़ा सय्यद मोहम्मद मेहंदी तबातबाई अस्फ़ाहानी।
5. शहीद राबे हज़रत आक़ा सय्यद मेहंदी इब्ने सय्यद हिदायतुल्लाह अस्फ़हानी।

fgUnqLrku okilh%

उलूमे अक़ली व नक़ली हासिल करने के बाद इजतेहाद के इजाज़े लेकर आप हिन्दुस्तान लौटे और अपने वतन नसीराबाद में क़याम किया जहाँ बाग़ात की तैयारी और मकानों के निर्माण का काम पूरा किया। जब आपका सम्बन्ध अवध की रियासत से स्थापित हो चुका तो निर्माण का दौर शुरू हुआ। जिसकी कई यादगारों मे नसीराबाद की मस्जिद भी है जिसकी तारीख़ ज़ाकिरे सय्यदुश शुहदा मुल्ला मोहम्मद 'ख़ता' शोस्तरी ने कही।

तबारकल्लाह अज़ीं मस्जिदे कि तारीखश
नविश्ता किल्के कज़ा मस्जिदे ख़जिस्ता बिना।

x@j+kuevkc dk y[kuÅ esavkxeu rFkk mlle; dsgkykr %

नवाब आसिफ़ुद्दौला की इच्छा और नवाब हसन रज़ा खाँ के कहने पर नसीराबाद से आकर लखनऊ में मौलाना स्थायी रूप से रहने लगे। हुकूमत की तरफ़ से शहर के पुराने इलाक़े फिरंगी महल से निकट मुहल्ले में जगह मिली जो इस समय जौहरी महल्ले के नाम से मशहूर है। ग़दर 1857 ई0 के बाद जो पहला बन्दोदस्त हुआ उसके प्राचीन काग़ज़ात देखने से मालूम होता है कि खसरे में केनिंग स्ट्रीट तक आराज़ी पर मौलवी दिलदार अली साहब लिखा हुआ है। चुनान्चे इमामबाड़ा गुफ़रानमआब इस ज़मीन पर स्थित है। (सवानेहे गुफ़रानमआब)

फ़िरंगी महल के हमसाया क़रार दिये जाने में आपत्ति न होना आपकी एकता पसन्दी का ज्वलन्त प्रमाण है और वह एतेदाल (सन्तुलन) व मियानारवी थी जिसमें अन्त तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

लखनऊ पंहुच कर आपने सही इस्लाम का प्रचार प्रसार किया और अज्ञान तथा भौतिकता के जो क़िले मज़बूत हो चुके थे उनकी ईंट से ईंट बजा दी। नमाज़ के बाद वाज़ (उपदेश) देने का सिलसिला शुरू किया। बिदअतों के ख़िलाफ भाषण दिये तथा व्यवहार और आदतों को सुधारने से सम्बन्धित खुत्बे दिये। नतीजे में आसिफ़ुद्दौला ने भांग खाने की आदत छोड़ दी।

अख़बारियत ने फ़िक्ह को स्थूल बना दिया था और तसव्वुफ ने इस्लामी मान्यताओं को शिथिल कर दिया था। आपने उनको क़लम और ज़बान के माध्यम से निशाना बनाया। परिणाम मे अख़बारियत के समर्थक फिकह व उसूल का पाठ पढ़ने लगे और तसव्वुफ़ के

परस्तार गेरूवे कपड़े पहने रहनुमा, शिया सुन्नी पीरी मुरीदी, उर्स, क़व्वाली, क़ब्रों पर चादरें पंखे और बैरक़ें चढ़ाने में हद से गुज़र चुके थे। गुफ़रानमआब ने भांग के चबूतरे, अहमद कबीर की गाय, शेख सद्दू का बकरा, हटीले का मुर्ग़, शेख फ़रीद की शीरीनी, बाबा शंकर गंज का कूंडा, मियां जलाल के कून्डे, बीबी गरज का रोट, शाह मदार की कन्दौरी, मदार साहब की अंख्यां और सय्यद सालार की बैरक़ जैसी रसमों को ख़त्म करा दिया।

साहबे 'तज़किरातुल उलमा' ने गुफरानमआब के समय लखनऊ की हालत यूँ लिखी है :

''अगरचे पहले यह शहर ज़्यादातर जाहिल लोगों का मस्कन था और गुफ़रानमआब के यहाँ आने के बाद यह इल्मों कमाल का मर्कज़ बना और उलेमा व शियान ने यहां सुकूनत अख्तियार की और यहाँ के उलमा और शिया ईरान और खुरासान की बराबरी का दावा करने लगे।'' (फारसी से अनुवाद)

हाजी मिर्ज़ा 'फ़सीह' 'नानो नमक' मसनवी में फ़रमाते हैं:

गुलशने शादाब गुलज़ारे अली
सय्यदे अररीफ दिलदारे अली
इल्म से जिसके अमल तौअम रहा
दीन जिसके ज़ोर से मुहकम रहा।
लखनऊ अब सब्ज़वारे हिन्द है
दमबदम अफजूं बहारे हिन्द है।

y[kuÅ esa et+gc dk Qjkx+ vkSj fgUn esa igyh ukekt+s tekvr %

'वरसतुल अम्बिया' में अल्लामा हिन्दी ने 'तज़किरातुल उलमा' व 'आईना–ए–हक़ नुमा' के हवाले से लिखा है कि ''पहली नमाज़े ज़ुहर जमाअत के साथ जो शियों के तरीक़े पर नवाब आसिफुद्दौला के दौर में जुमे के रोज़ तेरह रजब 1200 हि0 नवाब हसन रज़ा खां मरहूम के महल में हुई और उसी महीने की सत्ताईस तारीख नमाज़े जुमा लखनऊ में हुई। बहरहाल जनाब गुफ़रानमआब ने दीन की इशाअत और आईम्मा–ए–मासूमीन के मज़हब को फ़रोग़ दिया।'' (फारसी से अनुवादित)

तारीख़ 'इमादुस सआदत' पृष्ट 137 पर गुलाम अली इब्ने मोहम्मद अकमल खां मरहूम, नवाब हसन रज़ा खां मरहूम और गुफ़रानमॉब के तज़किरो में लिखते हैं शियों में ''गुफ़रानमआब जुमे की नमाज़ के बानी थें हिन्दुस्तान के किसी भी शहर में नमाज़े जुमा और जमाअत मज़हबे इमामिया में रायज न थी बल्कि किसी को गुमान भी न था कि ईरान या अरब मुल्कों के शिया इस्ना अशरी जमाअत से नमाज़ पढ़ते होंगे।'' (फारसी से अनुवादित)

शाह हुसैन मिर्ज़ा सफ़वी अपनी कविता में आपको हिन्दुस्तान का पहला इमामे जुमा क़रार देते हैं।

मीर दिलदार अली सफ़वए अत्याबे केराम
रूक्ने ईमां बखुदा बूद एमादे इस्लाम।
आलिमे बाअमलो मुजतहिदे क़ुदस निज़ाद
हादिये मज़हबे हक़ नायबे मासूमो इमाम
मुजतहिद पेश अज़ू कस न शुदा बूद बहिन्द।

मौलाना सय्यद मुर्तज़ा हुसैन साहिब 'मतलए अनवार' में लिखते हैं ''मौलाना दिलदार अली को नमाज़े जुमा, बिदअतों को मिटाने और इजतेहाद की तालीम क़ायम करने में अगवाई करने का सम्मान प्राप्त हुआ।

'सिलसिला–ए–तबक़ातुल उलमा' में मौलवी मिर्ज़ा मोहम्मद हादी अज़ीज लखनवी मरहूम लिखते हैं कि सबसे पहले नमाज़े ज़ुहरैन जुमे के दिन 13 रजब 1200 हि0 में नवाब हसन रज़ां खां के मकान पर हुई और हज़रत गुफ़रानमआब ने इक्तेदा की। 27 रजब को नमाज़े जुमा बजमाअत का आग़ाज़ हुआ।

जनाब गुफ़रानमआब हिन्दुस्तान की आख़री

खुद मुख़तार और शानदार हुकूमत के शरू ज़माने में आफ़ताब बनकर उभरे। अनके ज्ञान की रौशनी से आज तक की तारीख़ रौशन है। वह पहले आलिम है जो बर्रेसग़ीर से इज्तेहाद का इल्म हासिल करने के लिए ईराक़ गये और मुजद्दिदे अकबर सय्यद बाक़िर से फ़ैज़ हासिल करके आए।

गुफ़रानमआब की सद साला यादगार पर अल्लामा कन्तूरी ने उन्हें यूँ याद किया: "गुफ़रानमआब ने दीन का चिराग़ तमाम इण्डिया के घर घर में रौशन कर दिया और ऐसी रौशनी जिसको आज एक महीना कम सौ बरस गुज़रे रोज़े वफात से मरहूम गुफरानमआब की मगर आज भी हमारे मुल्क में एक हज़ार से ज़्यादा उलमाए दीन मौजूद है यह उन्ही की ज़ात का फैज़ है।"

f[kn~ekr %

1. लखनऊ में सबसे पहले आपने लाइब्रेरी कायम की जिसके बाद दूसरे उलमा ने कुतुबखाने कायम किये जिनमें आपकी मदद शामिल रही।

2. इमामबाड़े की तामीर : जिससे कौम में मजलिसों की बुनियाद पड़ी। यही इमामबाड़ा गुफ़रानमआब की आख़री आरामगाह है (जहां नासिरूल मिल्लत साहब मुश्किल के समय दुआ के लिए आते थे और जनाब गुफ़रानमआब की क़ब्र पर दुआ और मुनाजात करते थे) और शियी दुनिया में शामें ग़रीबां की मजलिस इसी इमामबाड़े की तारीख़ी यादगार है जिससे क़ौम का बच्चा–बच्चा वाक़िफ है।

3. इमामबाड़ा नसीराबाद का निर्माण।

4. मस्जिदों की तामीर का सिलसिला जिसमें नसीराबाद की मस्जिद भी शामिल है (जिसका वर्णन पहले हो चुका है)

5. नवाब आसिफुद्दौला से कह कर कर्बला में नहर बनवाई जिसे आसिफ़ी नहर कहते हैं। मिर्ज़ा फ़सीह फ़रमाते है :

हमने न सुना था न सुने थे ये सलफ़ तक
बरसात तो हो हिन्द में सैल आये नजफ़ तक।

6. नजफ़ व कर्बला और दूसरे मुकामात को बड़ी रक़में भेज कर मदरसों और तालिब इल्मों की मदद कीं

7. रौज़ए सय्यदुश शुहदा की तामीर में हिस्सा और अवध से ज़रो माल भेजना यह वह पहला क़दम था जिसको उनकी औलाद ने और बड़े पैमाने पर पंहुचाया।

8. तसव्वुफ और अख़बारियत की बिदअत का खात्मा किया।

9. अज़ाए सय्यदुश शुहदा को फ़रोग़ दिया।

10. जगह जगह कुएं बनवाए।

11. अधिकारियों एंव उच्च पदाधिकारियों को दीन व मज़हब का पाबन्द किया।

12. मज़हब के दुश्मनों की तहरीरों का अपने कलम व जुबान से प्रभावी जवाब दिया।

ngkUr %

18 रजब गुज़र कर उन्नीसवीं शब 1235 हि0 को (ग़ाज़ीउद्दीन हैदर की बादशाहत के काल में) आप का 69 साल की आयु में देहान्त हुआ और अपने ही इमामबाड़े में जिसे 'वादीउस सलामे हिन्द' कहते हैं दफन हुए। उनके देहान्त पर तमाम जमाअतों ने शोक मनाया और तमाम मुस्लिम संस्थाए मातम करती रहीं। हर मदरसे व तालीम गाह में ग़म मनाया गया और अधिकतर शायर व लेखक तारीख़ लिखने मे व्यस्त रहे।

d#vkrsrkjh[k+%

अल्लामा मौलाना सय्यद अहमद अली साहब मोहम्मदाबादी ने तारीख़ लिखी :

सरोशे ग़ैब हुमां वक़्ते नागहाँ फ़रमूद
सुतूने दीं बज़मीं ऊफ़ताद वावैला।
1235 हि0

मीर मुंशी गुलाम हुसैन रिज़वी शाएक़ जायसी की लिखी तारीख़ :

मलके गुफ़्त नमूदन्द ब ख़ाकश चूँनेहां

"महे ताबाने हिदायत बकसूफ आमदा हैफ़"
1 2 3 5 हि0

सय्यद मोहम्मद इस्माईल 'मुनीर' शिकोहाबादी (कुल्लियाते मुनीर से)

किबलए अहले हदीसो काबाए अहले कलाम
रूहे कुदसी पेशवा–ए–जिन्नो इन्सां हाय हाय!
जामे–ए–माकूलो मंकूल अशरफ़े अबरारे अस्र
आलमो अफ़क़ह पनाहे अहले ईमां हाय हाय!
नाएबे पाके अइम्मा बहरे जुहदो इल्मो फज़्ल
मीर दिलदार अली हादी–ए–दौरां हाय हाय!
औरओ अत्क़ा कलीमे औजे तूरे इजतेहाद
हस्त तसनीफ़ाते ऊ बेहदो–पायां हाय हाय!
नज़्म करदम मिसर–ए–तारीखे रेहलत ए 'मुनीर'
वारिसे इल्मे पयम्बर औजे ईमां हाय हाय!
1 2 3 5 हि0

दूसरी तारीख मैंने और मौज़ूं की 'मुनीर'
हाय बद्रे पाक दीं मेहरें सिपहरे इजतेहाद।
1 2 3 5 हि0

xQjkuevkc dh lUrkusa%

पहली बीवी (वतनिया) से पांच बेटे और दो बेटियां थी जिनके नाम निम्नलिखित है :

1. सुल्तानुल उलमा आक़ा सय्यद मोहम्मद मुजतहिद रिज़वानमआब गुफ़रानमआब के सबसे बड़े बेटे और उनके जानशीन देहानत 22 रबीउल अव्वल 1282 हि0।

2. सय्यदुल मुफ़स्सरीन मौलाना सय्यद अली मुजतहिद देहान्त 18 रमज़ान 1259 हि0 (आपने दो जिल्दों में कुर्आन मजीद की तफ़सीर लिखी है जो उर्दू भाषा में दुनिया की सबसे पहली तफ़सीर है।)

3. मौलाना सय्यद हसन मुजतहिद देहान्त 1260 हि0 (आपने उर्दू ज़बान में इल्मे कलाम की सबसे पहली किताब 'बाक़ेयातुस सालेहात लिखी)।

4. मौलाना सय्यद महदी मुजतहिद देहान्त ज़िलहिज्जा 1221 हि0।

5. सय्यदुल उलमा आक़ा सय्यद हुसैन इल्लीयीन मकान देहान्त 17 सफ़र 1273 हि0 (आप अपने वक़्त के आलम थे)।

6. ज़क़िया बेगम (लावलद)।

7. सलमा बेगम (लावलद)।

8. दूसरी बीवी (ग़ैर वतनिया) मुसम्मात नेका बीबी उर्फ़ ख़ानम साहिबा से तीन बेटियां पैदा हुईं जिनमें से दो लावलद फ़ौत हुई और सिर्फ एक बेटी लुत्फ़ुन्निसां बेगम की नस्ल चली।

gtjr xQjkuevkc ds[kkl f'k";%

1. मौलाना मिर्ज़ा काज़िम अली साहब
2. मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद ख़लील साहब
3. अल्हाज सय्यद अहमद अली साहब मोहम्मदाबादी
4. मुफती सय्यदमोहम्मद कुली मूसवी किन्तूरी
5. मौलाना सुब्हान अली खान साहब
6. मौलाना फ़ख़रूद्दीन अहमद खां उर्फ़ मिर्ज़ा जाफर साहब
7. मौलाना सय्यद अली नक़वी नसीराबादी
8. मौलाना सय्यद मोहम्मद बाक़र साहब वाएज़
9. मौलाना मीरज़ा मोहम्मद रफ़ी साहब
10.मौलाना मीर मुर्तज़ा साहब जौनपुरी
11.मौलाना सय्यद गुलाम हुसैन साहब
12.मौलाना सय्यद शाकिर अली साहब
13.मौलाना सय्यद अली साहब
14.हाजी मौलाना सय्यद निजामुद्दीन हुसैन साहब
15.मौलाना मिर्ज़ा जवाद अली साहब
16.मौलाना हकीम मिर्ज़ा अली शरीफ़ साहब
17.मौलाना सय्यद मुर्तज़ा साहब
18.मौलाना सय्यद बहाउद्दीन साहब
19.मौलाना सय्यद अली असग़र साहब
20.मौलाना हकीम मिर्ज़ा अली साहब
21.मौलाना सय्यद हिमायत हुसैन उर्फ मीर अली बख़्श कनतूरी
22.मौलाना मिर्ज़ा इस्माईल साहब मुबल्लिग़े दकन
23.मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद अली साहब

24.अल्लामा सय्यद सज्जाद अली जायसी
25.मौलाना मिर्ज़ा ज़ैनुद्दीन अहमद खां उर्फ मोहसिन साहब
26.मौलाना सय्यद आज़म अली साहब
27.मुल्ला अली नक़ी कज़वैनी साहब
28.मौलाना सय्यद अली नक़ी साहब इब्ने बहाउद्दीन साहब
29.मौलाना सय्यद बुनयाद अली साहब
30.मौलाना मीर खुदा बख़्श साहब (बानिये कर्बला तालकटोरा)
31.मौलाना मुन्नु खां साहब (आप सुन्नी मज़हब छोड़कर शिया हुए थे।)
32.मौलाना सय्यद अब्दुल अली देवखटवी
33.मौलाना सय्यद मोहम्मद साहब फैज़ाबादी
34.मौलाना सय्यद कल्बे अली साहब फैज़ाबादी
35.मौलाना सय्यद अशरफ अली साहब बिल्ग्रामी
36.मौलाना अमान अली साहब
37.मौलाना सय्यद अकबर अली हुसैनी साहब
38.मौलाना सय्यद अकरम अली बनारसी

xQjkuevkc dh fy[kh iqLrdsa%

1. 'एमादुल इस्लाम' जिसका असली नाम मिरआतुल उकूल है यह किताब इल्मे कलाम में इतनी विस्तृत एंव वज़नी है जिसका उदाहरण शियी दुनिया क्या पूरे आलमे इस्लाम में भी मौजूद नहीं है। यह अरबी भाषा में है और पांच जिल्दो में है जिसकी दो जिल्दें अभी अप्रकाशित हैं।
2. शहाबे साक़िब (अरबी में अप्रकाशित हैं) यह किताब सूफ़िया की रद में है।
3. जुल्फेक़ार (फारसी) यह किताब शाह अब्दुल अज़ीज़ की किताब तुहफ़ा–ए–इसना अशारिया के बारहवें अध्याय की रद् हैं
4. सवारिमुल इलाहीयात (फारसी) यह किताब तोहफ़ा–ए–इसना अशरिया के इलाहियात बाब की रद् है।
5. हुसामुल इस्लाम (फारसी) यह तुहफे के बाबे नबूवत का उत्तर है।
6. ख़ातमा–ए–किताबे सवारिम (फ़ारसी) यह इमामत के समर्थन में है।
7. एहयाउस्सुन्ना यह तुहफ़े की बहसे मआदो रजअत के खन्डन में है और फारसी में है।
8. रिसालए ग़ैबत (फ़ारसी) यह शाह अब्दुल अज़ीज़ के कथनों का ख़ण्डन है।
9. असासुल उसूल (अरबी) यह अख़बारियों का ख़ण्डन है।
10.मवाएज़े हुसैनिया यह आपके मवाएज़ (उपदेशों) का संग्रह है।
11.शरहे हदीक़तुल मुत्तक़ीन (फ़ारसी) किताबे सौम।
12.शरहे हदीक़तुल मुत्तक़ीन फ़ारसी किताबे ज़कात।
13.रिसाला दर बाबे नमाज़े जुमा।
14.हाशिया ए सदरा।
15.रिसाला अलमुसन्नात बित् तक़रीर।
16.मुन्तहल अफक़ार (अरबी) उसूले फिक़्ह।
17.इसारतुल अहज़ान अला क़तीलिल अतशान (अरबी–मक़तल)
18.मुसक्किनुल कुलूब इन्दा फक़दिल महबूब।
19.इजाज़ाए जनाब सुल्तानुल उलमा।
20.रिसाला दर जवाबे सवालाते मोहम्मद समी सूफ़ी (फारसी)।
21.रिसाला अरज़ीन (अरबी)।
22.रिसाला ज़हबिया।
23.रिसाला रद्दे नसारा।
24.मतारिक़ (रद्दें अख़बारीयीन)
25.रिसाला कफ़न (कफ़न के बारे में दुआएं)।
26.रिसाला शरहे सुल्लमुल उलूम मुल्ला हम्दुल्लाह (अरबी मंतिक)।
27.जवाबे मसाएले फ़िक़्हीया।

xQj+kuevkc dh 'kk;jh%

गुफरानमआब ने फारसी और अरबी भाषा में शायरी भी की हैं तखल्लुस आप सय्यद फरमाते थें



वहाबी मत का सत्य

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
l Eiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

fdLr %2

y§kd dsnks'kCn

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अलहम्दू लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु अला सय्यादिल मुरसलीन व आलिहित्ताहिरीन ।

(परम् दयावान, दयानिधान अल्लाह के नाम से जो सारे संसारों का पालनहार, अल्लाह की सारी सराहना और रसूलों के प्रमुख मुहम्मद स0अ0 और उनकी पाक सन्तान पर सलवात)

मेरा लखनऊ में वास्तविक बचपन तो नहीं किशोरावस्था का समय था जिसे भारत की प्रचलित भाषा में बच्चा ही कहा जाता है जब हिजाज़ आधुनिक सऊदी अरब में सऊदी साम्राज्य की स्थापना हुई और वहाबी विचारधारा पूरी शक्ति के साथ दुनिया के सामने आई और उनके कार्यो का आरम्भ इस प्रकार हुआ कि पहले जन्नतुल मोअल्ला (मक्का मुअज़्ज़मा) के पवित्र मज़ारों को तोड़ा गया और फिर नज्द के बड़े काज़ी इब्ने बलहीद ने दिखावा करते हुए मदीने के उलमा के फ़त्वे से 'जन्नतुल बक़ी' के पवित्र मज़ार भी तुड़वाए – जिससे मुस्लिम समाज के एक बड़े हिस्से में और शियों में पूर्ण रूप से एक खलबली मच गई इसलिए कि यहाँ शियों के चार इमाम हज़रत इमाम हसन[अ], इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ], इमाम मुहम्मद बाक़र[अ] और इमाम जाफ़रे सादिक़[अ] के पवित्र रौज़े भी थे। और इसके अलावा हज़रत सय्यदा–तुन–निसाईल आलामीन फ़ातेमा ज़हरा[स] की पवित्र क़ब्र भी थी। और दूसरी कब्रें भी थीं जिनसे दूसरे मुसलमान जुड़े हुए हैं।

भारत में शाह वली उल्लाह के समय से ही एक जत्था नज्दी विचारधारा को मानने वाला था मगर उस समय वह मुसलमानों में घुलेमिले थे। अब हिजाज़ की क्रान्ति के बाद उसने खुलकर इब्ने सऊद की हिमायत (support) शुरू कर दी। जफ़र अली खाँ का प्रसिद्ध समाचार पत्र ज़मींदार (लाहौर) इस जत्थे का महत्वपूर्ण अंग था। मशाइख़े सूफ़ी और लखनऊ के उलमा फिरंगी महल शियों के साथ मिल कर इस जत्थे से मुक़ाबले के लिए सामने आए। अतः फिरंगी महल में अन्जुमने "ख़ुद्दामुल–हरमैन" तैयार हुई जिसके संरक्षक उस समय फिरंगी महल के मौलाना क़यामुद्दीन मुहम्मद अब्दुलबारी साहब थे और आल इण्डिया शिया कान्फ्रेन्स लखनऊ ने अन्जुमने "तहफ़फ़ुज़ मआसिरे मुतबर्रिका" तैयार की।

बिना शिया –सुन्नी भेदभाव के रिफाहे आम, लखनऊ में एक आम सभा का आयोजन हुआ। फिर क़ैसर बाग़ लखनऊ में हिजाज़

कान्फ्रेन्स हुई जिसमें शियों और फिरंगी महल के उलमा के अलावा पूरे भारत के बड़े–बड़े आलिम, सूफ़ी और कुछ बड़े मुस्लिम नेता भी पधारे और उनमें से जिनके नाम और चेहरे मुझे याद हैं वह मौलाना अब्दुल माजिद बदायूँनी, शाह फ़ाखिर इलाहाबादी और मौलाना मज़हरूद्दीन, सम्पादक 'अलअमान' और सबसे आगे–आगे मौलाना शाह मुहम्मद सुलेमान फुलवारवी थे।

प्रसिद्ध मुस्लिम नेताओं में अली बन्धु शुरू में ईब्ने सऊद के प्रशंसक थे और बहुत सी घटनाओं को झुठलाते थे। मगर जब उन्होंने खुद जाकर हिजाज़ की स्थिति देखी तो उनके व्यवहार में बदलाव आया और हिजाज़ कान्फ्रेन्स में वह भी पधारे।

इस कान्फ्रेन्स में शिया उलमा में से जनाब नजमुल मिल्लत और जनाब नासिरूल मिल्लत आदि, अहले सुन्नत के उलमा में से मौलाना अब्दुल बारी आदि की सहमति से इलतवाए हज (हज स्थगन) का प्रस्ताव पेश हुआ और दूसरे उलमा के अलावा फख़्रेक़ौम मौलवी सय्यद कल्बे अब्बास साहब ने इसके समर्थन में घनघोर भाषण दिया। और जहाँ तक याद है मज़हरूद्दीन साहब सम्पादक अलअमान ने भी इसका समर्थन किया। मगर अली बन्धु मौलाना शौकत अली और मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और मौलाना मुहम्मद अली ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए यह श्लोक पढ़ाः

"उम्र गुज़री है इसी दश्त की सय्याही में"

(आयु इसी वन के घूमने में बीती है)

उनका भाशण समाप्त होते ही शाह मुहम्मद सुलेमान साहब फुलवारवी खड़े हुए और उन्होंने इनकी काट करते हुए कहा कि केवल राजनैतिक सूझबूझ ही कुछ नहीं इसके साथ–साथ धार्मिक सूझबूझ भी आवश्यक है। मैं इस श्लोक को आधा नहीं पढ़ूँगा मुझे अधिकार है कि मैं इस श्लोक का दूसरा टुकड़ा भी पढ़ूँ।

"पाँचवीं पुश्त है शब्बीर की मददाही में"

अतः बहुमत से प्रस्ताव माना गया। दूसरे उलमा के साथ इस जेहाद में हमारे पिता जनाब मौलाना मुम्ताजुल उलमा सय्यद अबुल हसन उर्फ़ मुन्नन साहब बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित थे इसलिए मैं जिसके युवावस्था के साथ क़लम चलाने का शुरूआती समय था अपने कलम को लेकर इस मैदान में उतरा और पहली बार बिना किसी भेदभाव के शिया सुन्नी इस्लामी दुनिया से परिचित हुआ।

इसमें सबसे महत्वपूर्ण मामला कब्रों पर ईमारत बनाने का था इसलिए "ज़मीदार" समाचार पत्र के एक निबन्ध की काट में "अलबैतुल मामूर फ़ी इमारतिल कुबूर" (क़ब्रों के भवन के सम्बन्ध में निर्मित घर) नाम की किताब लिखी जो उस समय के बड़े शिया प्रकाशन "नूरूलमताबिअ" से प्रकाशित हुई और बहुत सी इस्लामी पत्रिकाओं में इस पर समीक्षाऐं हुई और दूर–दूर से इसकी मांग आई और यह किताब बहुत थोड़े समय में ही सम्पूर्ण देश में फ़ैल गई।

...............(जारी)



मुख्य समाचार

तेहरान और मास्को इराक़ी हुकूमत और अवाम के साथ

इस्लामी जम्हूरिया ईरान की वज़ारत ख़ारजा के अरबी और अफ़्रीक़ी उमूर के डायरेक्टर हुसैन अब्दुल लिल्हयान ने कहा है कि रूस और ईरान, इराक़ी हुकूमत और अवाम के साथ हैं और इराक़ को तक़सीम करने की किसी को इजाज़त नहीं देंगे। अबना की रिपोर्ट के मुताबिक़ इस्लामी जम्हूरिया ईरान की वज़ारते ख़ारजा के अरबी और अफ़्रीक़ी उमूर के डायरेक्टर प्रेस टीवी के साथ गुफ़्तगू में कहा कि ईरान और रूस मुशतरका तौर पर दहशतगर्दी की ख़िलाफ़ इक़्दाम करने पर मुत्तफ़िक़ हैं उन्होंने कहा कि इराक़ के हालिया इन्तिख़ाबात में इराक़ी अवाम का नूरी अल मालिकी की पार्टी को हुकूमत तशकील देने में ईरान और रूस उसका एहतिराम करते हैं।

इराक़ में अमरीकी फ़ितना, साम्राज्य के ख़ात्मे का पेश ख़ेमा

इस्लामी जम्हूरिया ईरान में रज़ाकार फ़ोर्स बसीज के सरबराह जनरल मोहम्मद रज़ा नक़्दी ने कहा है कि अमरीका ने इराक़ में जो नया फ़ितना खड़ा किया है वह साम्राज और सहयूनी ख़ात्मा का पेशेख़ेमा है। जनरल मोहम्मद रज़ा ने ईरान के मग़रिब में सूबा कुर्दिस्तान के शहर सननदज में उलमा के इज्तिमा से ख़िताब में इराक़ में अमरीका के नये फ़ितने की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि इससे इराक़ में नई इस्तेक़ामत ज़ाहिर होगी और इस्लामी सर ज़मीनों के मशरिक़ से फ़िलस्तीन तक ये इस्तिक़ामत ज़ाहिर हो जायेगी। उन्होंने कहा कि दुश्मनाने इस्लाम आज इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि इस्लाम और इस्लामी इन्क़िलाब के सहारे उसकी तेज़ तरक़्क़ी को रोकने का वाहिद रास्ता मुसलमानों को आपस में लड़ाना है।

ग़ाज़ा पर इस्राईल की वहशियाना बमबारी

ग़ाज़ा पर इस्राईल की वहशियाना बमबारी का सिलसिला जारी है। इस्राईली बमबारी में अब तक कई अहले सुन्नत हज़रात की भी मौत हो चुकी है। ग़ाज़ा पर इस्राईल की वहशियाना बमबारी का सिलसिला मुसलसल जारी है। इत्तिलाआत के मुताबिक़ इस्राईल के लड़ाकू तैयारों ने ग़ाज़ा की पट्टी के इलाक़े रफ़ा में बमबारी की इसके नतीजे में हमास के अस्करी विंग अज़ुद्दीन अलक़साम ब्रिगेड से ताअल्लुक़ रखने वाले 9 सुन्नी हज़रात जान से हाथ धो बैठे। अलक़साम ब्रिगेड ने अपने एक बयान में 8 लोगों की मौत की ख़बर दी। दूसरी जानिब इस्राईली फ़ौज ने ग़ाज़ा की पट्टी के वस्ती इलाक़े अलबुर्ज कैम्प पर बमबारी करके दो सुन्नी फ़िलस्तीनियों को भी मार डाला। वाज़ेह रहे कि सहयूनी फ़ौज ने इससे पहले भी ग़ाज़ा की पट्टी में एक फ़िलस्तीनी नौजवान की नमाज़े जनाज़ा के मौक़े पर फ़ायरिंग करके 17 अफ़राद को शदीद ज़ख़्मी कर दिया था।

दाईश (द अ इ श) दौलत, इरतेदाद व अवारिज़ व सूरिश .... एच.एम. यासीन

दाईश : हैं कवाकिब कुछ, नज़र आते हैं कुछ। आजकल अख़बार दाईश की ख़बरों से भरे रहते हैं। इनके कारनामें हैं भी इस क़ाबिल कि अवाम उनके मन्फ़ी किरदार से वाक़िफ़ हो जायें, ग़ाफ़िल न रहें, लेकिन हक़ीक़त इसके बरअक्स है जो अख़बारों में दिखलाई जा रही है। हिन्दुस्तानी मीडिया जिसने सहयूनी मिज़ाज अपना लिया है और जो मुन्ज़्ज़िम तौर पर इस्राईली मशविरे से इस्लाम मुख़ालिफ़ हो गया है। इसी मीडिया ने इस्लामिक इत्तेहाद को पारा पारा करने के लिए इसको शिया सुन्नी रंग दे दिया है और ज़ाहिर ये किया जा रहा है कि दाईश वह सुन्नी टोला है जो शिया मुख़ालिफ़त में इराक़ में अपना असर क़ायम कर रहा है। आप जानते हैं मग़रिब में ख़ास तौर पर अमरीका और बरतानिया की तो रविश ही ये है कि "बाँटो और राज करो"। दरअस्ल ये ख़ित्ता ख़ुदा ने तेल के भंडार से मालामाल कर रखा है और तेल मौजूदा ज़िन्दगी का जुज़े लाज़िम है। पूरे कारोबार का दारोमदार पेट्रोल पर ही है। लेहाज़ा अमरीका की यह कोशिश है कि वह इस इलाक़े पर अपना क़ब्ज़ा कर ले। (इराक़–ईरान जंग और सद्दाम हुसैन का ख़ात्मा इसी का नतीजा था)। वह तेल मनमाने तरीक़े पर हर तरह हासिल करना चाहता है। इस्राईल जो ज़ाहिरन उसका परवरदा है लेकिन लेकिन अमरीका की पूरी इकोनॉमी यहूदियों के क़ब्ज़े मे है। इसलिए दोनो एक ही माँ "तसल्लुत" के बेटे हैं और यह सारा खेल रच रहे हैं। दाईश दरअस्ल दौलते इस्लामी इराक़ व शाम या आईएसआईएस यानी इस्लामिक स्ट्रीट इन इराक़ व शाम ऐसी तन्ज़ीम का नाम है जो चन्द सरफिरों ने अपनी दहशतगर्दी फैलाने के लिए क़ायम की है। और जो अल्क़ायदा की हमजुल्फ़ है। कहने को तो ये तन्ज़ीम इस्लाम के पैरोकार होने का दावा करती है लेकिन दाईश दरअस्ल नाम है दौलत इरतिदादो अवारिज़ व सोरिश या अंग्रेज़ी में अगर कहें तो ISIS Ignorant, Stupid, Islam Slaughters का है जिसके हाथों बेगुनाह और बेक़ुसूर औरतें, बच्चे और मर्द रात दिन क़त्ल किये जा रहे हैं और क़त्ल भी ऐसी बेदर्दी और ज़ालिमाना तौर पर कि ज़मीन पर लिटा कर उनके गले ज़िब्ह किये जा रहे हैं। क़त्ल के बाद हैवानियत की इन्तेहा करते हुए लाशों पर खड़े होकर तस्वीरें खिंचवाई जा रही हैं। औरतों आ अग़ुवा और अस्मतदरी, बच्चों के हाथ काटे जा रहे हैं और वह भी अल्लाहु अकबर के नारे लगा कर और इसको जिहाद का नाम दिया जा रहा है। ख़ुदा जाने ये कैसा जिहाद है। यह बात समझ में नहीं आई कि ये कौन से इस्लाम की पैरवी में ऐसा किया जा रहा है। आक़ा–ए–नामदार हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] जो इस्लाम लाये थे उसमें तो एक बेगुनाह, बेक़ुसूर का क़त्ल पूरी क़ौम के क़त्ल का मुतरादिफ़ है। हालाते हरब में भी उनके साथ ऐसा सुलूक हराम और शायद गुनाह है। दाईश दरअस्ल एक ख़ारजियों का टोला, अमरीका का मुँह बोला और यहूदी जमाअत का फंसौला है जिसे न शरीयते इस्लाम से मतलब है न इन्सानियत से। उन्हें मुसलमान किस तरह कहा जा सकता है? क्या कोई अमल इनका इन्सानी है? अभी पिछले दिनों ख़बर आई थी कि ये इस्लाम के चाहने वाले काबा को ढाना चाहते हैं। मौसूल में उन्होंने अम्बियाअ० के मज़ारात और सहाबा के मक़बरे और अल–क़बा की मस्जिदें मिस्मार कर दी हैं। उनको मुसलमान कहना तो दूर की बात ऐसा सोंचा भी नहीं जा सकता ।

इराक़ में मस्जिदें और इमाम बारगाहें शहीद किये जाने पर उलमा-ए-अहले सुन्नत शदीद बरहम

उलमा–ए–अहले सुन्नत इराक़ ने तक़फ़ीरी गिरोह दाईश के ज़रिये मुल्क के शहरों तलफ़र और मौसूल में मस्जिदों और इमामबारगाहों को शहीद किये जाने पर सख़्त ग़म व ग़ुस्सा का इज़्हार किया है। जमाअते उलमाये अहले सुन्नत ने दौलते इस्लामी इराक़ व शाम 'दाईश' नामी दहशतगर्दो की तरफ़ से तलफ़र शहर में इमामबारगाहों और मस्जिदों को शहीद किये जाने पर शदीद ग़म व ग़ुस्से का इज़्हार करते हुए इसे खुली दहशतगर्दी क़रार दिया है और उनके इक़्दामात की शदीद मज़म्मत की है। अरबी टीवी "अलमयादीन" के मुताबिक़ जमाअते अहले सुन्नत ने बयान जारी करते हुए दाईश की दहशतगर्दी की सख़्ती से मज़म्मत की है।